اٰیَاتُهَا ١١٨ (٢٣) سُوْرَةُ الْمُؤْمِنُوْنَ مَكِّيَّةٌ (٧٤) رُكُوْعَاتُهَا ٦

उस में ११८ आयतें हैं सूरह मोमिनून मक्का में नाज़िल हुई और ६ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۙ﴿١﴾ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ

यक़ीनन कामयाब हैं वो जो ईमान लाए। जो अपनी नमाज़ में ख़ुशूअ करने

خٰشِعُوْنَ ۙ﴿٢﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ ۙ﴿٣﴾

वाले हैं। और जो लग़विय्यात से ऐराज़ करने वाले हैं।

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ ۙ﴿٤﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ

और जो ज़कात देने वाले हैं। और जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने

حٰفِظُوْنَ ۙ﴿٥﴾ اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ

वाले हैं। मगर अपनी बीवियों के साथ या अपनी बाँदियों के साथ

فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ۚ﴿٦﴾ فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ

इस लिए के उन पर (उन में) कुछ मलामत नहीं। फिर जो उस के अलावा तलाश करेगा

فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ۚ﴿٧﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ

तो यक़ीनन वो ज़्यादती करने वाले हैं। और जो अपनी अमानतों और अपने अहद की देख भाल करने

رٰعُوْنَ ۙ﴿٨﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ۘ﴿٩﴾

वाले हैं। और जो अपनी नमाज़ की पाबन्दी करते हैं।

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْوٰرِثُوْنَ ۙ﴿١٠﴾ الَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ ؕ

यही लोग वारिस हैं। वो लोग जो वारिस होंगे जन्नतुल फिरदौस के।

هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۙ﴿١١﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ

वो उस में हमेशा रहेंगे। यक़ीनन हम ने इन्सान को पैदा किया

مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ ۚ﴿١٢﴾ ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِيْ قَرَارٍ

मिट्टी के ख़ुलासे से। फिर हम ने उस को नुत्फ़ा बना कर रखा एक महफ़ूज़

مَّكِيْنٍ ۖ﴿١٣﴾ ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا

जगह में। फिर हम ने नुत्फ़े को जमा हुवा ख़ून बनाया, फिर हम ने जमे हुए

الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ

खून को गोश्त का टुकड़ा बनाया, फिर गोश्त के टुकड़े से हम ने हड्डियाँ पैदा कीं, फिर हम ने हड्डियों के ऊपर

لَحْمًا ق ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ ط فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ

गोश्त चढ़ाया। फिर हम ने उस को एक दूसरी शकल में बनाया। फिर अल्लाह कितना अच्छा पैदा करने वाला,

الْخٰلِقِيْنَ ﴿١٤﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوْنَ ﴿١٥﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ

बाबरकत है। फिर तुम उस के बाद ज़रूर मरने वाले हो। फिर यक़ीनन तुम

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تُبْعَثُوْنَ ﴿١٦﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَآئِقَ

क़यामत के दिन ज़िन्दा कर के उठाए जाओगे। यक़ीनन हम ने तुम्हारे ऊपर सात आसमान पैदा किए।

وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غٰفِلِيْنَ ﴿١٧﴾ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً

और हम मख़लूक़ से ग़ाफ़िल नहीं। और हम ने आसमान से पानी एक मिक़दार से

بِقَدَرٍ فَاَسْكَنّٰهُ فِى الْاَرْضِ ق وَاِنَّا عَلٰى ذَهَابٍ بِهٖ

उतारा, फिर हम ने उसे ज़मीन में ठेहराया। और यक़ीनन हम उस के ले जाने पर भी

لَقٰدِرُوْنَ ﴿١٨﴾ فَاَنْشَاْنَا لَكُمْ بِهٖ جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ

क़ादिर हैं। फिर हम ने तुम्हारे लिए उस पानी के ज़रिए खजूर और अंगूर के बाग़ात

وَّ اَعْنَابٍ م لَكُمْ فِيْهَا فَوَاكِهُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿١٩﴾ وقف لازم

उगाए। तुम्हारे लिए उन में बहोत सारे मेवे हैं और उन में से तुम खाते भी हो।

وَ شَجَرَةً تَخْرُجُ مِنْ طُوْرِ سَيْنَآءَ تَنْۢبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ

और उस दरख्त को (भी पैदा किया) जो तूरे सीना से खाने वालों के लिए तेल और सालन ले कर

لِّلْاٰكِلِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَاِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ط نُسْقِيْكُمْ

उगता है। और यक़ीनन तुम्हारे लिए चौपाओं में इबरत है, के हम तुम्हें पिलाते हैं

مِّمَّا فِىْ بُطُوْنِهَا وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا

उस चीज़ से जो उन के पेटों में हैं और तुम्हारे लिए उन में और दूसरे बहोत से फाइदे भी हैं और उन में

تَاْكُلُوْنَ ﴿٢١﴾ وَ عَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ﴿٢٢﴾ ع وَلَقَدْ

से बाज़ों को तुम खाते भी हो। और तुम उन चौपाओं पर और कशतियों पर सवारी करते हो। यक़ीनन हम ने

اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا

रसूल बना कर भेजा नूह (अलैहिस्सलाम) को उन की क़ौम की तरफ़, फिर नूह (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह की

لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٢٣﴾ فَقَالَ الْمَلَؤُا الَّذِيْنَ

इबादत करो, तुम्हारे लिए उस के अलावा कोई माबूद नहीं। क्या फिर तुम डरते नहीं हो? तो सरदारों ने कहा

كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا هٰذَاۤ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يُرِيْدُ

जो काफिर थे आप की क़ौम में से के ये नूह नहीं है मगर तुम जैसा इन्सान। वो ये चाहता है

اَنْ يَّتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً ۚ

के तुम पर फज़ीलत पाए। और अगर अल्लाह चाहता तो फ़रिशतों को उतारता। हम

مَّا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِيْۤ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٤﴾ اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلٌ ۢ

ने ये बात हमारे पेहले बाप दादाओं में नहीं सुनी। यक़ीनन ये नूह तो सिर्फ़ एक ऐसा आदमी है जिसे

بِهٖ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوْا بِهٖ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٢٥﴾ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ

जुनून है, तो तुम उस के मुतअल्लिक़ इन्तिज़ार करो एक वक़्त तक। नूह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ मेरे रब! तू मेरी

بِمَا كَذَّبُوْنِ ﴿٢٦﴾ فَاَوْحَيْنَاۤ اِلَيْهِ اَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا

नुसरत फ़रमा उस पर जो उन्हों ने मुझे झुठलाया। तो हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) की तरफ़ वही की के आप कशती बनाएं हमारी

وَوَحْيِنَا فَاِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ فَاسْلُكْ فِيْهَا

आँखों के सामने और हमारे हुक्म से, फिर जब हमारा हुक्म आ जाए और तन्नूर जोश मारने लगे, तो उस में दाखिल

مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ

कर लो हर चीज़ का जोड़ा (यानी) दो दो और अपने मानने वालों को मगर वो जिन के बारे

عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ ۚ وَلَا تُخَاطِبْنِيْ فِي الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ

में पेहले से बात साबित हो चुकी है। और तुम मुझ से बात न करो उन लोगों के बारे में जो मुशरिक हैं।

اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ﴿٢٧﴾ فَاِذَا اسْتَوَيْتَ اَنْتَ وَمَنْ مَّعَكَ

इस लिए के ये ग़र्क़ किए जाएंगे। फिर जब आप और वो जो आप के साथ हैं कशती पर बराबर सवार

عَلَى الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ نَجّٰىنَا مِنَ الْقَوْمِ

हो जाएं तो यूं कहिए तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने हमें ज़ालिम क़ौम से

الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٨﴾ وَقُلْ رَّبِّ اَنْزِلْنِيْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّاَنْتَ

नजात दी। और यूं कहिए ऐ मेरे रब! तू मुझे बरकत वाली जगह उतार और तू

خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ﴿٢٩﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ وَّاِنْ كُنَّا

बेहतरीन उतारने वाला है। यक़ीनन इस में निशानियाँ हैं और यक़ीनन

لَمُبْتَلِيْنَ ﴿٣٠﴾ ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ﴿٣١﴾

हम आज़माने वाले हैं। फिर उन के बाद हम ने दूसरी क़ौमें पैदा कीं।

فَاَرْسَلْنَا فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ

फिर हम ने उन में भी उन्ही में से रसूल भेजा के तुम अल्लाह की इबादत करो, तुम्हारे लिए

مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٣٢﴾ وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهِ ع ۲

उस के अलावा कोई माबूद नहीं। क्या फिर तुम डरते नहीं हो? और उन की क़ौम के सरदारों ने कहा

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ وَاَتْرَفْنٰهُمْ

जो काफ़िर थे और जिन्हों ने आखिरत की मुलाक़ात को झुठलाया था और हम ने उन्हें दुन्यवी ज़िन्दगी में

فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يَاْكُلُ

आसूदा बना रखा था। उन्हों ने कहा के ये तो नहीं है मगर तुम जैसा एक इन्सान। वो खाता है

مِمَّا تَاْكُلُوْنَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُوْنَ ﴿٣٣﴾

उस में से जो तुम खाते हो और पीता है उस में से जो तुम पीते हो।

وَلَئِنْ اَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿٣٤﴾ اَيَعِدُكُمْ

और अगर तुम केहना मान लोगे अपने जैसे एक इन्सान का तो यक़ीनन तुम खसारा उठाने वाले हो। क्या वो तुम से

اَنَّكُمْ اِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَّعِظَامًا اَنَّكُمْ مُّخْرَجُوْنَ ﴿٣٥﴾

वादा करता है के तुम जब मर जाओगे और मिट्टी हो जाओगे और हड्डियाँ हो जाओगे तो तुम ज़िन्दा कर के निकाले

هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا تُوْعَدُوْنَ ﴿٣٦﴾ اِنْ هِىَ اِلَّا حَيَاتُنَا

जाओगे। दूर है दूर है वो जिस का तुम्हें वादा किया जा रहा है। ये ज़िन्दगी नहीं है मगर हमारी दुन्यवी ज़िन्दगी के

الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿٣٧﴾ اِنْ هُوَ

हम मरते हैं और हम ज़िन्दा होते हैं और हम दोबारा ज़िन्दा कर के क़बरों से उठाए नहीं जाएंगे। ये नबी

اِلَّا رَجُلُ ِۨافْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا وَّمَا نَحْنُ لَهٗ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣٨﴾

नहीं है मगर एक शख्स जिस ने अल्लाह पर झूठ घड़ लिया है और हम उस पर ईमान लाने वाले नहीं हैं।

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِىْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ﴿٣٩﴾ قَالَ عَمَّا قَلِيْلٍ

नबी ने कहा के ऐ मेरे रब! तू मेरी नुसरत फरमा इस वजह से के उन्हों ने मुझे झुठलाया। अल्लाह ने फरमाया के

لَّيُصْبِحُنَّ نٰدِمِيْنَ ﴿٤٠﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنٰهُمْ

थोड़े ही दिनों में ये ज़रूर नादिम होंगे। फिर उन को एक चीख ने पकड़ लिया सच्चे वादे पर, फिर हम ने उन्हें

غُثَآءً ۚ فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤١﴾ ثُمَّ اَنْشَاْنَا

कूड़ा करकट बना दिया। फिर नास हो ज़ालिम क़ौम के लिए। फिर हम ने

مِنْۢ بَعْدِهِمْ قُرُوْنًا اٰخَرِيْنَ ﴿٤٢﴾ مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا

उन के बाद दूसरी क़ौमें पैदा कीं। कोई उम्मत अपने मुक़र्ररा वक्त से न आगे जा सकती है

وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ﴿٤٣﴾ ثُمَّ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرَا ؕ كُلَّمَا

और न पीछे हट सकती है। फिर हम ने अपने रसूल लगातार भेजे। जब कभी किसी उम्मत के

جَآءَ اُمَّةً رَّسُوْلُهَا كَذَّبُوْهُ فَاَتْبَعْنَا بَعْضَهُمْ بَعْضًا

पास उन का रसूल आता तो वो उसे झुठलाते, फिर हम भी उन में से एक के बाद दूसरे को हलाक करते

وَّجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ ۚ فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٤٤﴾

चले गए, और हम ने उन को कहानियाँ बना दिया। फिर नास हो ऐसी क़ौम के लिए जो ईमान नहीं लाती।

ثُمَّ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى وَاَخَاهُ هٰرُوْنَ ۙ بِاٰيٰتِنَا وَ سُلْطٰنٍ

फिर हम ने मूसा और उन के भाई हारून (अलैहिस्सलाम) को रसूल बना कर भेजा अपने मोअजिज़ात दे कर और रोशन

مُّبِيْنٍ ﴿٤٥﴾ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا

दलील दे कर। फ़िरऔन और उस की जमाअत की तरफ़, तो उन्हों ने तकब्बुर किया और वो बड़ाई मारने वाले

عَالِيْنَ ﴿٤٦﴾ فَقَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَ قَوْمُهُمَا

लोग थे। फिर उन्हों ने कहा क्या हम ईमान लाएं अपने जैसे दो इन्सानों पर हालांके उन की क़ौम

لَنَا عٰبِدُوْنَ ﴿٤٧﴾ فَكَذَّبُوْهُمَا فَكَانُوْا مِنَ الْمُهْلَكِيْنَ ﴿٤٨﴾

हमारी ग़ुलाम है। फिर उन्हों ने उन दोनों को झुठलाया, चुनांचे वो हलाक किए जाने वालों में से हो गए।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿٤٩﴾

यक़ीनन हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को किताब दी, शायद वो लोग हिदायत पाएं।

وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗٓ اٰيَةً وَّاٰوَيْنٰهُمَآ اِلٰى رَبْوَةٍ

और हम ने मरयम (अलैहस्सलाम) के बेटे और उन की माँ को मोअजिज़ा बनाया और हम ने उन दोनों को ठिकाना दिया एक

ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِيْنٍ ﴿٥٠﴾ يٰٓاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا ع ٣

टीले के पास जो ठेहेरने के लाइक़ और चशमे वाला था। ऐ पैग़म्बरो! तुम खाओ

مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ؕ اِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿٥١﴾

पाकीज़ा चीज़ों में से और आमाले सालिहा करो। यक़ीनन मैं तुम्हारे आमाल खूब जानता हूँ।

وَاِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُوْنِ ﴿۵۲﴾

और यक़ीनन ये तुम्हारी उम्मत एक ही उम्मत है और मैं तुम्हारा रब हूँ, तो तुम मुझ से डरो।

فَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا ؕ كُلُّ حِزْبٍۭ بِمَا لَدَيْهِمْ

फिर वो अपने (दीन के) मुआमले में जमाअतें बन कर टुकड़े टुकड़े हो गए। हर गिरोह उस पर ख़ुश है

فَرِحُوْنَ ﴿۵۳﴾ فَذَرْهُمْ فِيْ غَمْرَتِهِمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿۵۴﴾ اَيَحْسَبُوْنَ

जो उन के पास है। इस लिए आप उन को उन की गुमराही में एक वक़्त तक छोड़ दीजिए। क्या ये गुमान कर रहे हैं

اَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهٖ مِنْ مَّالٍ وَّبَنِيْنَ ﴿۵۵﴾ نُسَارِعُ لَهُمْ

के जो हम माल और बेटे उन्हें दे रहे हैं, तो हम उन के लिए भलाइयों में जल्दी कर रहे हैं? बल्के

فِي الْخَيْرٰتِ ؕ بَلْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ﴿۵۶﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ خَشْيَةِ

ये लोग समझते नहीं, यक़ीनन वो जो अपने रब के ख़ौफ़ से

رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ﴿۵۷﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ﴿۵۸﴾

डरते हैं। और जो अपने रब की आयतों पर ईमान रखते हैं।

وَالَّذِيْنَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُوْنَ ﴿۵۹﴾ وَالَّذِيْنَ يُؤْتُوْنَ

और जो अपने रब के साथ शरीक नहीं करते। और देते हैं वो जो भी देते हैं इस हाल में के

مَآ اٰتَوْا وَّقُلُوْبُهُمْ وَجِلَةٌ اَنَّهُمْ اِلٰى رَبِّهِمْ رٰجِعُوْنَ ﴿۶۰﴾

उन के दिल डर रहे होते हैं के उन्हें अपने रब की तरफ लौट कर जाना है।

اُولٰٓئِكَ يُسٰرِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ وَهُمْ لَهَا سٰبِقُوْنَ ﴿۶۱﴾

यही लोग भलाइयों में जल्दी करते हैं और वही उस की तरफ सबक़त करने वाले हैं।

وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ۫ وَلَدَيْنَا كِتٰبٌ يَّنْطِقُ

हम किसी शख़्स पर बोझ नहीं डालते मगर उस की ताक़त के मुताबिक़ और हमारे पास किताब (आमालनामा) है जो

بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۶۲﴾ بَلْ قُلُوْبُهُمْ فِيْ غَمْرَةٍ

सच्चाई के साथ (हर बात) बतला देगी और उन पर ज़ुल्म नहीं होगा। बल्के उन के दिल इस से ग़फलत

مِّنْ هٰذَا وَلَهُمْ اَعْمَالٌ مِّنْ دُوْنِ ذٰلِكَ هُمْ لَهَا عٰمِلُوْنَ ﴿۶۳﴾

मैं हैं और उन के इस के अलावा और भी आमाल हैं जो वो कर रहे हैं।

حَتّٰٓى اِذَآ اَخَذْنَا مُتْرَفِيْهِمْ بِالْعَذَابِ اِذَا هُمْ يَجْـَٔرُوْنَ ﴿۶۴﴾

यहां तक के जब हम उन के ख़ुशहाल लोगों को अज़ाब में पकड़ेंगे, तो फौरन वो चिल्लाने लगेंगे।

لَا تَجْـَٔرُوا الْيَوْمَ ۫ اِنَّكُمْ مِّنَّا لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿٦٥﴾ قَدْ كَانَتْ

(कहा जाएगा के) आज मत चिल्लाओ। यक़ीनन तुम्हारी हम से (बचाने के लिए) मदद नहीं की जाएगी। इस लिए

اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ تَنْكِصُوْنَ ﴿٦٦﴾ ۙ

के हमारी आयतें तुम पर तिलावत की जाती थीं, तो तुम अपनी एड़ियों के बल उल्टे भागते थे।

مُسْتَكْبِرِيْنَ ۖۗ بِهٖ سٰمِرًا تَهْجُرُوْنَ ﴿٦٧﴾ اَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا

तकब्बुर करते हुए, रात में कुरआन के खिलाफ क़िस्सागोई करते, उस को छोड़ते हुए। क्या उन्हों ने इस

الْقَوْلَ اَمْ جَآءَهُمْ مَّا لَمْ يَاْتِ اٰبَآءَهُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦٨﴾ ۫

बात में ग़ौर नहीं किया या उन के पास आई वो चीज़ जो उन के पेहले बाप दादा के पास नहीं आई?

اَمْ لَمْ يَعْرِفُوْا رَسُوْلَهُمْ فَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٦٩﴾ ۫

या उन्हों ने अपने रसूल को पेहचाना नहीं, फिर वो उसे अजनबी समझते हैं?

اَمْ يَقُوْلُوْنَ بِهٖ جِنَّةٌ ؕ بَلْ جَآءَهُمْ بِالْحَقِّ وَ اَكْثَرُهُمْ

या वो केहते हैं के इस नबी को जुनून है? बल्के वो उन के पास हक़ ले कर आया है और उन में से अक्सर

لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ اَهْوَآءَهُمْ لَفَسَدَتِ

हक़ को नापसन्द करते हैं। और अगर हक़ उन की ख्वाहिशात के ताबेअ होता तो आसमान

السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ؕ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِذِكْرِهِمْ

और ज़मीन और जो उन में हैं सब तबाह हो जाते। बल्के हम उन के पास उन की नसीहत लाए हैं,

فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧١﴾ ؕ اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ خَرْجًا

फिर वो अपनी नसीहत से ऐराज़ कर रहे हैं। क्या आप उन से खर्च का सवाल करते हैं?

فَخَرَاجُ رَبِّكَ خَيْرٌ ۖۗ وَّهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٧٢﴾ وَاِنَّكَ

फिर आप के रब का दिया हुवा खर्च बेहतर है। और वो बेहतरीन रोज़ी देने वाला है।

لَتَدْعُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٧٣﴾ وَاِنَّ الَّذِيْنَ

और यक़ीनन आप उन्हें बुलाते हैं सीधे रास्ते की तरफ। और जो

لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنٰكِبُوْنَ ﴿٧٤﴾

आखिरत पर ईमान नहीं रखते वो सीधे रास्ते से मुंह मोड़ रहे हैं।

وَلَوْ رَحِمْنٰهُمْ وَ كَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِّنْ ضُرٍّ لَّلَجُّوْا فِيْ طُغْيَانِهِمْ

और अगर हम उन पर रहम करें और उन से उस तकलीफ को दूर कर दें जो उन को है तो ज़रूर वो लगे रहेंगे अपनी

يَعْمَهُوْنَ ۝٧٥ وَلَقَدْ اَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوْا

शरारत में बेहेकते हुए। यक़ीनन हम ने उन को अज़ाब में पकड़ा, फिर उन्हों ने अपने रब के सामने

لِرَبِّهِمْ وَمَا يَتَضَرَّعُوْنَ ۝٧٦ حَتّٰٓى اِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا

न आजिज़ी की और न गिड़गिड़ाए। यहां तक के जब हम ने उन पर सख्त अज़ाब के

ذَا عَذَابٍ شَدِيْدٍ اِذَا هُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ۝٧٧ ع وَهُوَ الَّذِيْٓ ع ٤

दरवाज़े खोल दिए तो अचानक वो उस में मायूस हो कर रेह गए। और वही अल्लाह है

اَنْشَاَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِيْلًا

जिस ने तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाए। बहोत कम

مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝٧٨ وَهُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِي الْاَرْضِ

तुम शुक्र अदा करते हो। और वही अल्लाह है जिस ने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया

وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝٧٩ وَهُوَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَ يُمِيْتُ وَلَهُ

और उसी की तरफ तुम इकट्ठे किए जाओगे। और वही ज़िन्दा करता है और मारता है और उसी के लिए

اخْتِلَافُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝٨٠ بَلْ قَالُوْا

रात और दिन का आना जाना है। क्या फिर तुम अक़्ल नहीं रखते? बल्के उन्हों ने कही

مِثْلَ مَا قَالَ الْاَوَّلُوْنَ ۝٨١ قَالُوْٓا ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا

उसी जैसी बात जो पेहलों ने कही थी। उन्हों ने कहा के क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी हो जाएंगे और

وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ۝٨٢ لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا

हड्डियाँ हो जाएंगे, तब हम क़बरों से उठाए जाएंगे? यक़ीनन हम से और हमारे बाप दादाओं से भी इस का

هٰذَا مِنْ قَبْلُ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝٨٣ قُلْ

इस से पेहले वादा किया गया, यक़ीनन ये पेहले लोगों की घड़ी हुई कहानियाँ हैं। आप फरमा दीजिए के किस

لِّمَنِ الْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهَآ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝٨٤ سَيَقُوْلُوْنَ

की मिल्क है ज़मीन और वो चीज़ें जो ज़मीन में हैं अगर तुम्हें मालूम है? अनक़रीब वो कहेंगे के अल्लाह

لِلّٰهِ ؕ قُلْ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝٨٥ قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ

की। आप फ़रमा दीजिए क्या फिर तुम नसीहत हासिल नहीं करते? आप फ़रमा दीजिए कौन सातों आसमानों का

وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ۝٨٦ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ اَفَلَا

रब है और अर्शे अज़ीम का रब है? अनक़रीब वो कहेंगे के अल्लाह। आप फरमा दीजिए के क्या फिर तुम

تَتَّقُوْنَ ﴿٨٥﴾ قُلْ مَنْۢ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ يُجِيْرُ

डरते नहीं हो? आप फरमा दीजिए के किस के कब्ज़े में है हर चीज़ की सल्तनत और जो पनाह देता है

وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٦﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ

और उस पर किसी को पनाह नहीं दी जा सकती अगर तुम्हें मालूम है? अनक़रीब वो कहेंगे के अल्लाह के लिए।

قُلْ فَاَنّٰى تُسْحَرُوْنَ ﴿٨٩﴾ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِالْحَقِّ وَاِنَّهُمْ

आप फ़रमा दीजिए के फिर तुम कहाँ से जादूज़दा हो जाते हो? बल्के हम उन के पास हक़ को लाए हैं और यक़ीनन

لَكٰذِبُوْنَ ﴿٩٠﴾ مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ مِنْ وَّلَدٍ وَّمَا كَانَ مَعَهٗ

वो झूठे हैं। अल्लाह ने औलाद नहीं बनाई और उस के साथ कोई

مِنْ اِلٰهٍ اِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ اِلٰهٍۢ بِمَا خَلَقَ وَ لَعَلَا بَعْضُهُمْ

माबूद नहीं। तब तो हर माबूद अपनी मखलूक़ को ले कर अलग हो जाता और उन में से एक

عَلٰى بَعْضٍ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٩١﴾ عٰلِمِ الْغَيْبِ

दूसरे पर चढ़ाई करता। अल्लाह पाक है उन बातों से जो वो बयान कर रहे हैं। जो पोशीदा और ज़ाहिर को

وَالشَّهَادَةِ فَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٩٢﴾ قُلْ رَّبِّ اِمَّا تُرِيَنِّيْ ع ٥

जानने वाला है, फिर बरतर है इस से जो ये शरीक बनाते हैं। आप फरमा दीजिए ऐ मेरे रब! अगर तू मुझे

مَا يُوْعَدُوْنَ ﴿٩٣﴾ رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِيْ فِي الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٩٤﴾

दिखाए वो जिस से उन्हें डराया जा रहा है। ऐ मेरे रब! तू मुझे ज़ालिम लोगों में शामिल मत करना।

وَاِنَّا عَلٰٓى اَنْ نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقٰدِرُوْنَ ﴿٩٥﴾ اِدْفَعْ بِالَّتِيْ

और यक़ीनन हम इस पर क़ादिर हैं के आप को दिखा दें वो अज़ाब जिस से हम उन्हें डरा रहे हैं। आप दफा कीजिए

هِيَ اَحْسَنُ السَّيِّئَةَ ؕ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَصِفُوْنَ ﴿٩٦﴾

बुराई को उस तरीक़े से जो बेहतर हो। हम खूब जानते हैं जो कुछ वो बयान कर रहे हैं।

وَقُلْ رَّبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ ﴿٩٧﴾ وَاَعُوْذُ

और आप फरमा दीजिए ऐ मेरे रब! मैं शैतान के वसावस से तेरी पनाह मांगता हूँ। और मैं तेरी पनाह मांगता

بِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ ﴿٩٨﴾ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ

हूँ इस से के वो मेरे पास हाज़िर हों। यहां तक के जब उन में से किसी एक की मौत आएगी वो कहेगा ऐ

قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ ﴿٩٩﴾ لَعَلِّيْٓ اَعْمَلُ صَالِحًا فِيْمَا تَرَكْتُ

मेरे रब! तू मुझे (दुन्या में) वापस लौटा दे। शायद मैं नेक अमल करूँ उस दुन्या में जिस को मैं छोड़ कर आया हूँ।

كَلَّا ؕ اِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَآئِلُهَا ؕ وَمِنْ وَّرَآئِهِمْ

हरगिज़ नहीं। यक़ीनन ये (बे मअना) कलाम है जो वो कहे जा रहा है। और उन के पीछे

بَرْزَخٌ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ۝١٠٠ فَاِذَا نُفِخَ فِى الصُّوْرِ

बरज़ख है उस दिन तक जिस दिन (क़बरों से) मुर्दे उठाए जाएंगे। फिर जब सूर में फूंक मारी जाएगी

فَلَاۤ اَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَّلَا يَتَسَآءَلُوْنَ ۝١٠١ فَمَنْ

तो उन के दरमियान उस दिन न रिश्तेदारियाँ होंगी और न वो एक दूसरे को पूछेंगे। फिर जिन के

ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝١٠٢ وَمَنْ

वज़न के पलड़े भारी होंगे तो ये फ़लाह पाने वाले हैं। और जिन के

خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْۤا

वज़न के पलड़े हलके होंगे ये वो लोग हैं जिन्हों ने अपनी जानों को

اَنْفُسَهُمْ فِىْ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ۝١٠٣ تَلْفَحُ وُجُوْهَهُمُ

खसारे में डाला, वो जहन्नम में हमेशा रहेंगे। आग उन के चेहरे झुलसा

النَّارُ وَهُمْ فِيْهَا كٰلِحُوْنَ ۝١٠٤ اَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِىْ تُتْلٰى

देगी और वो उस में बदशकल हो कर पड़े रहेंगे। (कहा जाएगा) क्या मेरी आयतें तुम पर तिलावत नहीं

عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ۝١٠٥ قَالُوْا رَبَّنَا غَلَبَتْ

की जाती थीं, फिर तुम उन आयतों को झुठलाते थे? वो कहेंगे ऐ हमारे रब! हम पर

عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَآلِّيْنَ ۝١٠٦ رَبَّنَاۤ اَخْرِجْنَا

हमारी बदबख्ती ग़ालिब आ गई और हम गुमराह लोग थे। ऐ हमारे रब! तू हमें जहन्नम से निकाल,

مِنْهَا فَاِنْ عُدْنَا فَاِنَّا ظٰلِمُوْنَ ۝١٠٧ قَالَ اخْسَـُٔوْا فِيْهَا

फिर अगर हम दोबारा ऐसा करें तो यक़ीनन हम क़ुसूरवार हैं। अल्लाह फरमाएंगे के तुम उस में ज़लील हो कर

وَلَا تُكَلِّمُوْنِ ۝١٠٨ اِنَّهٗ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْ عِبَادِىْ

पड़े रहो और तुम मुझ से बात मत करो। इस लिए के मेरे बन्दों की एक जमाअत केहती

يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَاۤ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ

थी के ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए, तू हमारी मग़फिरत कर दे और तू हम पर रहम फरमा और तू बेहतरीन

الرّٰحِمِيْنَ ۝١٠٩ فَاتَّخَذْتُمُوْهُمْ سِخْرِيًّا حَتّٰۤى اَنْسَوْكُمْ

रहम करने वाला है। तो तुम ने उन्हें मज़ाक़ बनाया था यहां तक के उन्हों ने तुम से मेरी

ذِكْرِىْ وَكُنْتُمْ مِّنْهُمْ تَضْحَكُوْنَ ﴿١١٠﴾ اِنِّىْ جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ

याद को भुला दिया था और तुम उन से हंसते रहे। यक़ीनन मैं ने आज उन्हें बदला दिया

بِمَا صَبَرُوْٓا ۙ اَنَّهُمْ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿١١١﴾ قٰلَ كَمْ لَبِثْتُمْ

उन के सब्र का के वही कामयाब हैं। अल्लाह पूछेंगे के तुम ज़मीन

فِى الْاَرْضِ عَدَدَ سِنِيْنَ ﴿١١٢﴾ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا

में सालों की गिन्ती के ऐतेबार से कितना रहे? वो कहेंगे के एक दिन

اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسْـَٔلِ الْعَآدِّيْنَ ﴿١١٣﴾ قٰلَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا

या एक दिन से भी कम, फिर आप गिनने वालों से पूछ लीजिए। अल्लाह फ़रमाएंगे के तुम नहीं रहे मगर थोड़ा,

لَّوْ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١١٤﴾ اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ

काश के तुम जानते। या फिर तुम ने ये गुमान कर रखा है के हम ने तुम्हें बेकार

عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿١١٥﴾ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ

पैदा किया है और ये के तुम हमारी तरफ वापस नहीं लाए जाओगे? फिर अल्लाह जो बरहक़ बादशाह है,

الْحَقُّ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ﴿١١٦﴾ وَمَنْ

वो बरतर है। उस के सिवा कोई माबूद नहीं। वो अर्शे अज़ीम का रब है। और जो

يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا

अल्लाह के साथ दूसरे माबूद को पुकारे जिस की उस के पास कोई दलील नहीं, तो उस का हिसाब सिर्फ

حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿١١٧﴾

उस के रब के यहां होगा। यक़ीनन काफिर लोग फलाह नहीं पाएंगे।

وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿١١٨﴾ ع ١٢

और आप केह दीजिए ऐ मेरे रब! तू मग़फिरत फरमा और रहम कर और तू बेहतरीन रहम करने वाला है।

اٰيَاتُهَا ٦٤ (٢٤) سُوْرَةُ النُّوْرِ مَدَنِيَّةٌ (١٠٢) رُكُوْعَاتُهَا ٩

और ६ रूकूअ हैं सूरह नूर मदीना में नाज़िल हुई उस में ६४ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

سُوْرَةٌ اَنْزَلْنٰهَا وَفَرَضْنٰهَا وَاَنْزَلْنَا فِيْهَآ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ

ये एक सूरत है जिस को हम ने उतारा है और जिस को हम ने फर्ज़ किया है और इस सूरत में हम ने रोशन आयतें

لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۝۱ اَلزَّانِيَةُ وَ الزَّانِيْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ

उतारी हैं ताके तुम नसीहत हासिल करो। ज़िना करने वाली औरत और ज़िना करने वाला मर्द, तो तुम उन में से

وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ ۪ وَّلَا تَاْخُذْكُمْ بِهِمَا رَاْفَةٌ

हर एक को सौ कोड़े मारो। और तुम्हें उन पर रहम न आए

فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ

अल्लाह के हुक्म की तामील में अगर तुम ईमान रखते हो अल्लाह पर और आखिरी दिन पर।

وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَآئِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝۲ اَلزَّانِيْ

और चाहिए के उन को सज़ा देते वक़्त ईमान वालों की एक जमाअत मौजूद रहे। ज़िना करने वाला मर्द

لَا يَنْكِحُ اِلَّا زَانِيَةً اَوْ مُشْرِكَةً ۫ وَّالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَآ

निकाह नहीं करता मगर ज़िनाकार औरत से या मुशरिक औरत से। और ज़िनाकार औरत से निकाह नहीं करता

اِلَّا زَانٍ اَوْ مُشْرِكٌ ۚ وَحُرِّمَ ذٰلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ۝۳

मगर ज़िना करने वाला मर्द या मुशरिक। और ये ईमान वालों पर हराम कर दिया गया है।

وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَاْتُوْا بِاَرْبَعَةِ

और जो पाकदामन औरतों पर तोहमत लगाएं, फिर वो चार गवाह

شُهَدَآءَ فَاجْلِدُوْهُمْ ثَمٰنِيْنَ جَلْدَةً وَّلَا تَقْبَلُوْا لَهُمْ

न लाएं, तो तुम उन को अस्सी कोड़े मारो और उन की गवाही कभी भी

شَهَادَةً اَبَدًا ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝۴ ۙ اِلَّا الَّذِيْنَ

क़बूल न करो। और ये लोग नाफरमान हैं। मगर वो लोग

تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۚ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ

जिन्हों ने तौबा की उस के बाद और इस्लाह कर ली। तो यक़ीनन अल्लाह बख्शने वाला,

رَّحِيْمٌ ۝۵ وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ اَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ

निहायत रहम वाला है। और जो अपनी बीवियों पर तोहमत लगाएं और उन के पास गवाह

شُهَدَآءُ اِلَّآ اَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ اَحَدِهِمْ اَرْبَعُ شَهٰدٰتٍۭ

न हों सिवाए अपने आप के तो उन में से एक की गवाही चार मरतबा अल्लाह की क़सम खा कर गवाही

بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝۶ وَالْخَامِسَةُ اَنَّ لَعْنَتَ

देना है के यक़ीनन वो सच्चा है। और पांचवीं (गवाही में ये कहे) के अल्लाह की

اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كَانَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝٧ وَيَدْرَؤُا عَنْهَا

लानत है मेरे ऊपर अगर मैं झूठों में से हूँ। और औरत से सज़ा

الْعَذَابَ اَنْ تَشْهَدَ اَرْبَعَ شَهٰدٰتٍۭ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ

टल सकती है के वो चार मरतबा अल्लाह की क़सम खा कर गवाही दे के यक़ीनन ये मर्द

لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝٨ وَالْخَامِسَةَ اَنَّ غَضَبَ اللّٰهِ عَلَيْهَآ

झूठों में से है। और पांचवीं गवाही (में यूं कहे) के मेरे ऊपर अल्लाह का गज़ब हो

اِنْ كَانَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝٩ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ

अगर वो मर्द सच्चों में से है। और अगर अल्लाह का तुम पर फ़ज़्ल और उस की महरबानी न होती (तो

وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ حَكِيْمٌ ۝١٠ اِنَّ الَّذِيْنَ جَآءُوْ ع ٧

अज़ाब आ जाता) और ये के अल्लाह तौबा क़बूल करने वाला, हिक्मत वाला है। यक़ीनन वो लोग जो बदतरीन

بِالْاِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ ؕ لَا تَحْسَبُوْهُ شَرًّا لَّكُمْ ؕ بَلْ هُوَ

झूठ लाए हैं वो तुम ही में से एक जमाअत है। तुम उस को अपने हक़ में बुरा मत समझो। बल्के वो

خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ مَّا اكْتَسَبَ مِنَ الْاِثْمِ ۚ

तुम्हारे लिए बेहतर है। उन में से हर शख़्स के लिए वो गुनाह है जो उस ने कमाया।

وَالَّذِيْ تَوَلّٰى كِبْرَهٗ مِنْهُمْ لَهٗ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝١١

और उन में से जो इस झूठ के बड़े हिस्से का ज़िम्मेदार है उस के लिए भारी अज़ाब है।

لَوْلَآ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بِاَنْفُسِهِمْ

जब तुम ने उस को सुना तो ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों ने अपने आप के मुतअल्लिक़ अच्छा गुमान

خَيْرًا ۙ وَّقَالُوْا هٰذَآ اِفْكٌ مُّبِيْنٌ ۝١٢ لَوْلَا جَآءُوْ

क्यूं नहीं किया? और यूँ क्यूं नहीं कहा के ये तो साफ़ झूठ है? वो उस पर

عَلَيْهِ بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ ۚ فَاِذْ لَمْ يَاْتُوْا بِالشُّهَدَآءِ

चार गवाह क्यूं न लाए? फिर जब वो गवाह नहीं लाए

فَاُولٰٓئِكَ عِنْدَ اللّٰهِ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ۝١٣ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ

तो यही लोग अल्लाह के नज़दीक झूठे हैं। और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल

عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِيْ مَآ

और उस की महरबानी न होती दुन्या और आख़िरत में तो तुम्हें उस की वजह से जिस

اَفَضْتُمْ فِيْهِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝١٤ اِذْ تَلَقَّوْنَهٗ بِاَلْسِنَتِكُمْ

में तुम लगे रहे भारी अज़ाब पहोंचता। जब के तुम उसे अपनी ज़बानों से नक़्ल करते थे

وَ تَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِكُمْ مَّا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ وَّ تَحْسَبُوْنَهٗ

और तुम अपने मुंह से ऐसी बात केहते थे जिस की तुम्हारे पास कोई दलील नहीं और तुम उसे हल्का

هَيِّنًا ۖ وَّهُوَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمٌ ۝١٥ وَلَوْلَاۤ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ

समझते थे। हालांके वो अल्लाह के नज़दीक बहोत भारी है। और जब तुम ने उस को सुना तो तुम ने यूँ

قُلْتُمْ مَّا يَكُوْنُ لَنَاۤ اَنْ نَّتَكَلَّمَ بِهٰذَا ۖ سُبْحٰنَكَ هٰذَا

क्यूं नहीं कहा के हमारे लिए मुनासिब नहीं के हम ये बात ज़बान पर लाएं। ऐ अल्लाह! तू पाक है, ये

بُهْتَانٌ عَظِيْمٌ ۝١٦ يَعِظُكُمُ اللّٰهُ اَنْ تَعُوْدُوْا لِمِثْلِهٖۤ اَبَدًا

तो भारी बुहतान है। अल्लाह तुम्हें इस की नसीहत करता है के तुम दोबारा ऐसी हरकत न करना कभी भी

اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝١٧ وَيُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ؕ وَاللّٰهُ

अगर तुम ईमान वाले हो। और अल्लाह तुम्हारे लिए साफ़ साफ़ आयतें बयान करता है। और अल्लाह

عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝١٨ اِنَّ الَّذِيْنَ يُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِيْعَ الْفَاحِشَةُ

इल्म वाला, हिक्मत वाला है। यक़ीनन वो लोग जो ये चाहते हैं के ईमान वालों में

فِى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۙ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ

बेहयाई फैले, उन के लिए दुन्या और आखिरत में दर्दनाक अज़ाब है।

وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝١٩ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ

और अल्लाह जानता है और तुम जानते नहीं हो। और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की महरबानी

عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝٢٠ يٰۤاَيُّهَا

النصف ع ٢ ١٠ ٨

तुम पर न होती (तो अज़ाब आता) और ये के अल्लाह निहायत शफ़क़त वाला, रहमत वाला है। ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ وَمَنْ يَّتَّبِعْ

ईमान वालो! तुम शैतान के क़दम बक़दम मत चलो। और जो शैतान

خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ فَاِنَّهٗ يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ

के क़दम बक़दम चलेगा तो यक़ीनन शैतान बेहयाई और बुरी बातों का हुक्म देता है।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ مَا زَكٰى مِنْكُمْ مِّنْ

और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की महरबानी तुम पर न होती तो तुम में से कोई कभी भी पाक न होता

اَحَدٍ اَبَدًا ۙ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ

(तौबा कर के), लेकिन अल्लाह पाक बना देता है जिसे चाहता है (तौबा क़बूल कर के)। और अल्लाह सुनने वाला,

عَلِيْمٌ ﴿٢٢﴾ وَلَا يَاْتَلِ اُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ

इल्म वाला है। और तुम में से बुज़ुर्गी वाले और वुस्अत वाले इस की क़सम न खाएं

اَنْ يُّؤْتُوْٓا اُولِي الْقُرْبٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ

के वो माल नहीं देंगे रिश्तेदारों को और मिस्कीनों को और अल्लाह के रास्ते में हिजरत करने

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ وَلْيَعْفُوْا وَلْيَصْفَحُوْا ؕ اَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ يَّغْفِرَ

वालों को। बल्के उन्हें चाहिए के वो मुआफ करें और दरगुज़र करें। क्या तुम पसन्द नहीं करते के अल्लाह

اللّٰهُ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٣﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ

तुम्हारी मग़फिरत कर दे। और अल्लाह बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। यक़ीनन वो लोग जो तोहमत

الْمُحْصَنٰتِ الْغٰفِلٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ لُعِنُوْا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۪

लगाते हैं पाकदामन बेखबर ईमान वाली औरतों पर, उन पर लानत है दुन्या और आखिरत में।

وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٤﴾ يَّوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ اَلْسِنَتُهُمْ

और उन के लिए भारी अज़ाब है। उस दिन जिस दिन उन के ख़िलाफ़ गवाही देंगी उन की ज़बानें

وَ اَيْدِيْهِمْ وَ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٥﴾ يَوْمَئِذٍ

और उन के हाथ और उन के पैर उन आमाल की जो वो करते थे। जिस दिन

يُّوَفِّيْهِمُ اللّٰهُ دِيْنَهُمُ الْحَقَّ وَ يَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ هُوَ

अल्लाह उन्हें इन्साफ के तक़ाज़े के मुताबिक़ पूरी सज़ा देगा और वो जान लेंगे के अल्लाह

الْحَقُّ الْمُبِيْنُ ﴿٢٥﴾ اَلْخَبِيْثٰتُ لِلْخَبِيْثِيْنَ وَالْخَبِيْثُوْنَ

बरहक़ है, साफ साफ बयान करने वाला है। बुरी औरतें बुरे मर्दों के लिए हैं और बुरे मर्द

لِلْخَبِيْثٰتِ ۚ وَالطَّيِّبٰتُ لِلطَّيِّبِيْنَ وَالطَّيِّبُوْنَ لِلطَّيِّبٰتِ ۚ

बुरी औरतों के लिए हैं। और अच्छी औरतें अच्छे मर्दों के लिए हैं और अच्छे मर्द अच्छी औरतों के लिए हैं।

اُولٰٓئِكَ مُبَرَّءُوْنَ مِمَّا يَقُوْلُوْنَ ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ

ये लोग बरी हैं उन बातों से जो वो केह रहे हैं। उन के लिए मग़फिरत है और इज़्ज़त वाली

كَرِيْمٌ ﴿٢٦﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ ع ٤

रोज़ी है। ऐ ईमान वालो! तुम अपने घरों के अलावा घरों में दाख़िल

بُيُوْتِكُمْ حَتّٰى تَسْتَاْنِسُوْا وَ تُسَلِّمُوْا عَلٰٓى اَهْلِهَا ؕ ذٰلِكُمْ

मत हो जब तक के तुम इजाज़त न ले लो और वहाँ वालों को सलाम न कर लो। ये

خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٧﴾ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فِيْهَآ

तुम्हारे लिए बेहतर है ताके तुम नसीहत हासिल करो। फिर अगर तुम उन घरों में किसी को

اَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوْهَا حَتّٰى يُؤْذَنَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ قِيْلَ

न पाओ तो उस में दाखिल मत हो यहां तक के तुम्हें इजाज़त दी जाए। और अगर तुम से कहा जाए

لَكُمُ ارْجِعُوْا فَارْجِعُوْا هُوَ اَزْكٰى لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ

के तुम वापस लौट जाओ तो तुम वापस लौट जाओ, ये तुम्हारे लिए ज़्यादा पाकीज़गी वाला है। और अल्लाह

بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿٢٨﴾ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَدْخُلُوْا

तुम्हारे आमाल जानते हैं। तुम पर कोई गुनाह नहीं इस में के तुम दाखिल हो

بُيُوْتًا غَيْرَ مَسْكُوْنَةٍ فِيْهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ

ऐसे घरों में जिस में रिहाइश न हो, जिस में तुम्हारा सामान हो। और अल्लाह जानता है उन बातों को

مَا تُبْدُوْنَ وَمَا تَكْتُمُوْنَ ﴿٢٩﴾ قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا

जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो। आप फरमा दीजिए ईमान वालों को के वो अपनी निगाहें

مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَ يَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ؕ ذٰلِكَ اَزْكٰى

पस्त रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करें। ये उन के लिए पाकीज़गी वाला

لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ

है। यक़ीनन अल्लाह बाखबर है उन कामों से जो वो कर रहे हैं। और आप ईमान वाली औरतों से

يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَ يَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ

केह दीजिए के वो अपनी निगाहें पस्त रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करें और अपनी ज़ीनत

وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ

ज़ाहिर न करें मगर वो जो उस में से ज़ाहिर हो जाती हो, और उन्हें चाहिए के अपनी ओढ़नियों के

بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى جُيُوْبِهِنَّ ۪ وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ

आँचल अपने गिरेबान पर डाल लिया करें। और अपनी ज़ीनत ज़ाहिर न करें

اِلَّا لِبُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اٰبَآئِهِنَّ اَوْ اٰبَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ

मगर अपने शौहरों के सामने या अपने बाप दादा के सामने या अपने शौहरों के बाप दादा के सामने या

اَبْنَآئِهِنَّ اَوْ اَبْنَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْٓ

अपने बेटों के सामने या अपने शौहरों के बेटों के सामने या अपने भाइयों के सामने या अपने भाइयों

اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْٓ اَخَوٰتِهِنَّ اَوْ نِسَآئِهِنَّ

के बेटों के सामने या अपनी बेहनों के बेटों के सामने या अपनी औरतों के सामने

اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ اَوِ التّٰبِعِيْنَ غَيْرِ اُولِي الْاِرْبَةِ

या अपनी ममलूका बांदियों के सामने या उन खादिमों के सामने जो हाजत वाले

مِنَ الرِّجَالِ اَوِ الطِّفْلِ الَّذِيْنَ لَمْ يَظْهَرُوْا عَلٰى عَوْرٰتِ

नहीं हैं, (ये फ़ेहरिस्त बालिग़) मर्दों में से (है), या उन बच्चों में से जो अब तक औरतों की छुपी हुई चीज़ों पर

النِّسَآءِ ۪ وَلَا يَضْرِبْنَ بِاَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِيْنَ

मुत्तलेअ नहीं हुए। और उन औरतों को चाहिए के वो अपने पैर ज़ोर से न मारें ताके मालूम हो जाए उन की वो

مِنْ زِيْنَتِهِنَّ ؕ وَتُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ جَمِيْعًا اَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ

ज़ीनत जिसे वो छुपा रही हैं। और सब अल्लाह की तरफ़ तौबा करो, ऐ ईमान वालो!

لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۳۱﴾ وَاَنْكِحُوا الْاَيَامٰى مِنْكُمْ وَالصّٰلِحِيْنَ

ताके तुम फ़लाह पाओ। और अपने में से बेनिकाहों का निकाह करा दो और तुम्हारे ग़ुलाम

مِنْ عِبَادِكُمْ وَ اِمَآئِكُمْ ؕ اِنْ يَّكُوْنُوْا فُقَرَآءَ يُغْنِهِمُ

और तुम्हारी बांदियों में से जो नेक हों उन का निकाह करा दो। अगर वो फ़क़ीर हैं तो अल्लाह

اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۳۲﴾ وَلْيَسْتَعْفِفِ

उन्हें अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर देगा। और अल्लाह वुस्अत वाले, इल्म वाले हैं। और चाहिए के पाकदामन

الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ نِكَاحًا حَتّٰى يُغْنِيَهُمُ اللّٰهُ

रहें वो जो निकाह की कुदरत नहीं पाते यहां तक के अल्लाह उन्हें अपने फ़ज़्ल से

مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَالَّذِيْنَ يَبْتَغُوْنَ الْكِتٰبَ مِمَّا مَلَكَتْ

ग़नी कर दे। और जो मुकातब बनना चाहते हैं तुम्हारे ग़ुलाम बांदियों

اَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوْهُمْ اِنْ عَلِمْتُمْ فِيْهِمْ خَيْرًا ۖۗ وَّاٰتُوْهُمْ

में से तो उन्हें मुकातब बना लो अगर तुम उन में भलाई जानो। और उन को दो

مِّنْ مَّالِ اللّٰهِ الَّذِيْٓ اٰتٰىكُمْ ؕ وَلَا تُكْرِهُوْا فَتَيٰتِكُمْ

अल्लाह के उस माल में से जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है। और तुम अपनी बांदियों को ज़िना पर

عَلَى الْبِغَآءِ اِنْ اَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوْا عَرَضَ الْحَيٰوةِ

मजबूर मत करो ताके तुम दुन्यवी ज़िन्दगी का सामान तलाश करो अगर वो पाकदामन रेहना

الدُّنْيَا ؕ وَمَنْ يُّكْرِهْهُّنَّ فَاِنَّ اللّٰهَ مِنْۢ بَعْدِ اِكْرَاهِهِنَّ

चाहें। और जो उन को मजबूर करेगा तो यक़ीनन अल्लाह उन के मजबूर किए जाने के बाद

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۳۳﴾ وَلَقَدْ اَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكُمْ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ

बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। यक़ीनन हम ने तुम्हारी तरफ़ साफ़ साफ़ आयतें उतारी हैं

وَّ مَثَلًا مِّنَ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً

और उन लोगों की मिसाल उतारी है जो तुम से पेहले गुज़र चुके और मुत्तक़ियों के लिए नसीहत

لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿۳۴﴾ اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ مَثَلُ ع ١٠/٤

उतारी है। अल्लाह आसमानों और ज़मीन का नूर है। उस के नूर

نُوْرِهٖ كَمِشْكٰوةٍ فِيْهَا مِصْبَاحٌ ؕ اَلْمِصْبَاحُ فِيْ زُجَاجَةٍ ؕ

की मिसाल ऐसी है जैसा के एक ताक़चा जिस में चिराग़ हो। चिराग़ एक शीशे में हो।

اَلزُّجَاجَةُ كَاَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُّوْقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُّبٰرَكَةٍ

शीशा ऐसा जैसा के चमकता हुवा सितारा, उसे ईंधन दिया जाता है बाबरकत ज़ैतून के

زَيْتُوْنَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَّلَا غَرْبِيَّةٍ ۙ يَّكَادُ زَيْتُهَا يُضِیْٓءُ

दरख्त से जो न मशरिक़ी है और न मग़रिबी। उस का तेल क़रीब है के रोशनी दे दे

وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ؕ نُوْرٌ عَلٰى نُوْرٍ ؕ يَهْدِى اللّٰهُ لِنُوْرِهٖ مَنْ

अगर्चे उसे आग न छुई हो। नूर के ऊपर नूर। अल्लाह अपने नूर की तरफ रहनुमाई देता है जिसे

يَّشَآءُ ؕ وَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ

चाहता है। और अल्लाह इन्सानों के लिए मिसालें बयान करते हैं। और अल्लाह हर चीज़ को

شَیْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۳۵﴾ فِيْ بُيُوْتٍ اَذِنَ اللّٰهُ اَنْ تُرْفَعَ وَ يُذْكَرَ

खूब जानने वाले हैं। उन घरों में जिन के बुलन्द किए जाने का अल्लाह ने हुक्म दिया और जिस में अल्लाह का नाम

فِيْهَا اسْمُهٗ ۙ يُسَبِّحُ لَهٗ فِيْهَا بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ﴿۳۶﴾

लिए जाने का अल्लाह ने हुक्म दिया। उन घरों में सुबह व शाम उस की तस्बीह पढ़ते हैं

رِجَالٌ ۙ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَ

ऐसे मर्द जिन को न तिजारत ग़ाफिल करती है अल्लाह की याद से, न ख़रीद व फ़रोख़्त,

اِقَامِ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَآءِ الزَّكٰوةِ ۙ يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ

न नमाज़ के क़ाइम करने से और न ज़कात देने से ग़ाफिल करती है। वो डरते हैं ऐसे दिन से जिस में

فِيْهِ الْقُلُوْبُ وَالْاَبْصَارُ ﴿٣٧﴾ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ

दिल और निगाहें उलट पलट हो जाएंगी। ताके अल्लाह उन को बदला दे उन अच्छे कामों का जो

مَا عَمِلُوْا وَ يَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ

उन्हों ने किए और अपने फ़ज़्ल से उन को मज़ीद दे। और अल्लाह बेहिसाब रोज़ी

يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَعْمَالُهُمْ

देता है जिसे चाहता है। और वो लोग जो काफिर हैं उन के आमाल ऐसे हैं

كَسَرَابٍۭ بِقِيْعَةٍ يَّحْسَبُهُ الظَّمْاٰنُ مَآءً ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَهٗ

जैसा के रेगिस्तान की सराब जिसे प्यासा पानी समझता है। यहां तक के जब वो उस के पास आता है

لَمْ يَجِدْهُ شَيْـًٔا وَّوَجَدَ اللّٰهَ عِنْدَهٗ فَوَفّٰىهُ حِسَابَهٗ ؕ

तो उसे कुछ भी नहीं पाता और अल्लाह को उस के पास पाएगा फिर अल्लाह उसे उस का हिसाब पूरा पूरा देगा।

وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٣٩﴾ اَوْ كَظُلُمٰتٍ فِيْ بَحْرٍ لُّجِّيٍّ

और अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। या (काफ़िरों के आमाल का हाल ऐसा है) जैसा के गेहरे समन्दर की

يَّغْشٰىهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ سَحَابٌ ؕ

तारीकियाँ जिन को मौज ढांपे हुए है, उस के ऊपर भी मौज, उस मौज के ऊपर बादल।

ظُلُمٰتٌۢ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ؕ اِذَآ اَخْرَجَ يَدَهٗ

कई तारीकियाँ उन में से एक दूसरे के ऊपर। जब वो अपना हाथ निकालता है

لَمْ يَكَدْ يَرٰىهَا ؕ وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا فَمَا لَهٗ

तो क़रीब भी नहीं है के उस को देख सके। और जिस के लिए अल्लाह ने नूर नहीं बनाया उस के लिए

مِنْ نُّوْرٍ ﴿٤٠﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُسَبِّحُ لَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ ع ١١

कोई नूर नहीं। क्या आप ने देखा नहीं के अल्लाह की तस्बीह करते हैं वो सब ही जो आसमानों में हैं

وَالْاَرْضِ وَالطَّيْرُ صٰٓفّٰتٍ ؕ كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهٗ

और ज़मीन में हैं और परिन्दे भी सफ बांध कर। हर एक ने अपनी नमाज़ और अपनी तस्बीह को मालूम

وَتَسْبِيْحَهٗ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٤١﴾ وَلِلّٰهِ مُلْكُ

कर रखा है। और अल्लाह खूब जानता है वो काम जो वो कर रहे हैं। और अल्लाह के लिए आसमानों

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿۴۲﴾ اَلَمْ تَرَ

और ज़मीन की सल्तनत है। और अल्लाह ही की तरफ़ लौटना है। क्या आप ने देखा नहीं

اَنَّ اللّٰهَ يُزْجِيْ سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهٗ ثُمَّ يَجْعَلُهٗ

के अल्लाह बादलों को चलाते हैं, फिर उन को जोड़ते हैं, फिर उसे तेह बतेह

رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ وَيُنَزِّلُ

करते हैं? फिर तू देखेगा बारिश को के उस के दरमियान से निकलती है। और वो

مِنَ السَّمَآءِ مِنْ جِبَالٍ فِيْهَا مِنْۢ بَرَدٍ فَيُصِيْبُ بِهٖ

आसमान से पहाड़ों को उतारता है जिन में ओला होता है, फिर उसे पहोंचाता है

مَنْ يَّشَآءُ وَيَصْرِفُهٗ عَنْ مَّنْ يَّشَآءُ ؕ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهٖ

जिसे चाहता है और हटाता है उस को जिस से चाहता है। क़रीब है के उस की बिजली की चमक

يَذْهَبُ بِالْاَبْصَارِ ﴿۴۳﴾ يُقَلِّبُ اللّٰهُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ؕ

बीनाई को भी सल्ब कर ले। अल्लाह रात और दिन को पलटते हैं।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِي الْاَبْصَارِ ﴿۴۴﴾ وَاللّٰهُ

यक़ीनन उस में बसीरत वालों के लिए इबरत है। और अल्लाह ने

خَلَقَ كُلَّ دَآبَّةٍ مِّنْ مَّآءٍ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ

हर चलने वाले जानवर को पैदा किया पानी से। फिर उन में से कुछ चलते हैं

عَلٰى بَطْنِهٖ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى رِجْلَيْنِ ۚ وَمِنْهُمْ

अपने पेट के बल। और उन में से कुछ चलते हैं दो पैरों पर। और उन में से कुछ

مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰۤى اَرْبَعٍ ؕ يَخْلُقُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

चलते हैं चार पैरों पर। अल्लाह पैदा करता है जिसे चाहता है। यक़ीनन अल्लाह

عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۴۵﴾ لَقَدْ اَنْزَلْنَاۤ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ ؕ

हर चीज़ पर क़ुदरत वाला है। यक़ीनन हम ने साफ़ साफ़ आयतें उतारी हैं।

وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۴۶﴾

और अल्लाह हिदायत देता है जिसे चाहता है सीधे रास्ते की तरफ।

وَيَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالرَّسُوْلِ وَاَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلّٰى

और ये लोग केहते हैं के हम ईमान लाए अल्लाह पर और रसूल पर और हम ने इताअत की, फिर उन में

فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ؕ وَمَآ اُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾

से एक जमाअत उस के बाद ऐराज़ करती है। और ये मोमिन नहीं हैं।

وَاِذَا دُعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ

और जब उन्हें अल्लाह और उस के रसूल की तरफ़ बुलाया जाता है ताके वो उन के दरमियान फैसला करे

اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَاِنْ يَّكُنْ لَّهُمُ الْحَقُّ

तो अचानक उन में से एक जमाअत ऐराज़ करती है। और अगर उन का हक़ हो

يَاْتُوْٓا اِلَيْهِ مُذْعِنِيْنَ ﴿٤٩﴾ؕ اَفِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ

तो वो उस की तरफ़ तेज़ दौड़ते हुए आएंगे। क्या उन के दिलों में मर्ज़ है

اَمِ ارْتَابُوْٓا اَمْ يَخَافُوْنَ اَنْ يَّحِيْفَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُوْلُهٗ ؕ

या वो शक करते हैं या वो डरते हैं इस से के अल्लाह और उस का रसूल उन पर ज़ुल्म करेंगे?

بَلْ اُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٥٠﴾ؑ اِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِيْنَ

बल्के यही लोग ज़ालिम हैं। ईमान वालों का तो केहना ये होता है

اِذَا دُعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ

जब उन्हें अल्लाह और उस के रसूल की तरफ बुलाया जाए ताके वो उन के दरमियान फैसला करे के वो

اَنْ يَّقُوْلُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٥١﴾

कहें के “ سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ” (हम ने सुन लिया और खुशी से मान भी लिया)। और यही लोग फ़लाह पाने वाले हैं।

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَ يَخْشَ اللّٰهَ وَيَتَّقْهِ فَاُولٰٓئِكَ

और जो अल्लाह और उस के रसूल की बात खुशी से मानेगा और अल्लाह से डरेगा और तक़्वा इखतियार करेगा

هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿٥٢﴾ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ

तो यही लोग कामयाब होंगे। और ये अल्लाह की क़स्में खाते हैं अपनी क़स्मों को मुअक्कद कर के

لَئِنْ اَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ ؕ قُلْ لَّا تُقْسِمُوْا ۚ طَاعَةٌ

के अगर आप उन को हुक्म दोगे तो ज़रूर वो निकलेंगे। आप फ़रमा दीजिए के तुम क़स्में मत खाओ। तुम्हारी

مَّعْرُوْفَةٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٥٣﴾ قُلْ

इताअत जानी पेहचानी है। यक़ीनन अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाख़बर है। आप फ़रमा दीजिए

اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا

के तुम अल्लाह की इताअत करो और रसूल की इताअत करो। फिर अगर वो ऐराज़ करें तो उस के ज़िम्मे

عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَ عَلَيْكُمْ مَّا حُمِّلْتُمْ ؕ وَاِنْ تُطِيْعُوْهُ

वही है जो उस पर बोझ रखा गया है और तुम पर वो है जिस का तुम्हें मुकल्लफ बनाया गया है। और अगर तुम

تَهْتَدُوْا ؕ وَمَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٥٤﴾

उस की इताअत करोगे तो राह पा जाओगे। और रसूल के ज़िम्मे सिवाए साफ साफ पहोंचा देने के कुछ भी नहीं।

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

अल्लाह ने वादा किया है उन लोगों से जो तुम में से ईमान लाए और नेक अमल किए

لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ

के ज़रूर अल्लाह उन्हें ज़मीन में खलीफा बनाएगा जैसा के उन से पेहले वालों को

مِنْ قَبْلِهِمْ ۪ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ

खलीफ़ा बनाया। और ज़रूर उन के लिए उन का दीन मज़बूत कर देगा जो उन के लिए अल्लाह ने पसन्द किया है

وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ؕ يَعْبُدُوْنَنِيْ

और उन के खौफ के बाद उन्हें अमन बदले में देगा। इस लिए के वो मेरी इबादत करते हैं

لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْـًٔا ؕ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ

और मेरे साथ कोई चीज़ शरीक नहीं ठेहराते। और जो उस के बाद कुफ्र करेंगा तो यही

هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٥٥﴾ وَ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ

लोग नाफ़रमान हैं। और तुम नमाज़ क़ाइम करो और ज़कात दो

وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٥٦﴾ لَا تَحْسَبَنَّ

और रसूल का केहना मानो ताके तुम पर रहम किया जाए। तू मत समझ काफिरों को

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مُعْجِزِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ

के ज़मीन में (भाग कर) अल्लाह को आजिज़ कर देंगे। और उन का ठिकाना जहन्नम है।

وَلَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿٥٧﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِيَسْتَاْذِنْكُمُ ع ١٣

और वो बुरी जगह है। ऐ ईमान वालो! चाहिए के तुम से (दाखिल होते वक़्त) इजाज़त तलब करें

الَّذِيْنَ مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ

तुम्हारे ममलूक (गुलाम बांदियाँ) और वो बच्चे जो तुम में से बुलूग़ की उम्र को नहीं पहोंचे

ثَلٰثَ مَرّٰتٍ ؕ مِنْ قَبْلِ صَلٰوةِ الْفَجْرِ وَحِيْنَ تَضَعُوْنَ

तीन मरतबा (इजाज़त तलब करें)। फज्र की नमाज़ से पेहले और जिस वक़्त तुम अपने

ثِيَابَكُمْ مِّنَ الظَّهِيْرَةِ وَمِنْۢ بَعْدِ صَلٰوةِ الْعِشَآءِ ثَلٰثُ

कपड़े उतारते हो दोपहर के वक़्त और इशा की नमाज़ के बाद। ये तीन

عَوْرٰتٍ لَّكُمْ ؕ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌۢ بَعْدَهُنَّ ؕ

तुम्हारे सतर के औक़ात हैं। तुम पर और उन पर इन तीन औक़ात के बाद कोई गुनाह नहीं है।

طَوّٰفُوْنَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ كَذٰلِكَ

इस लिए के वो तुम्हारे पास बार बार आने जाने वाले हैं, तुम में से एक दूसरे के पास। इसी तरह

يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۵۸﴾

तुम्हारे लिए अल्लाह आयतों को साफ़ साफ़ बयान करते हैं। और अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं।

وَاِذَا بَلَغَ الْاَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَاْذِنُوْا

और जब तुम में से बच्चे बुलूग़ की उम्र को पहोंच जाएं, तो उन्हें भी चाहिए के इजाज़त लें

كَمَا اسْتَاْذَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ

जिस तरह के वो इजाज़त लेते थे जो उन से पेहले थे। इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी

اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۵۹﴾ وَالْقَوَاعِدُ

आयतें साफ़ साफ़ बयान करते हैं। और अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं। और औरतों में से

مِنَ النِّسَآءِ الّٰتِيْ لَا يَرْجُوْنَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ

वो बैठी हुई औरतें जो निकाह की उम्मीद नहीं रखतीं तो उन पर कोई गुनाह

جُنَاحٌ اَنْ يَّضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجٰتٍۭ بِزِيْنَةٍ ؕ

नहीं है के वो अपने कपड़े उतारें इस हाल में के वो ज़ीनत को ज़ाहिर करने वाली न हों।

وَاَنْ يَّسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَّهُنَّ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۶۰﴾

और ये के वो पाकदामन बन कर रहें ये उन के लिए बेहतर है। और अल्लाह सुनने वाले, इल्म वाले हैं।

لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ

अन्धे पर कोई हरज नहीं और लंगड़े पर कोई हरज नहीं

وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ وَّلَا عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ

और बीमार पर कोई हरज नहीं और तुम्हारे अपने ऊपर कोई हरज नहीं इस में

اَنْ تَاْكُلُوْا مِنْۢ بُيُوْتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اٰبَآئِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ

के तुम खाओ अपने घरों से या अपने बाप दादाओं के घरों से या अपनी माओं के

اُمَّهٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اِخْوَانِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَخَوٰتِكُمْ

घरों से या अपने भाइयों के घरों से या अपनी बेहनों के घरों से

اَوْ بُيُوْتِ اَعْمَامِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ عَمّٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ

या अपने चचाओं के घरों से या अपनी फूफियों के घरों से या अपने मामुओं के

اَخْوَالِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ خٰلٰتِكُمْ اَوْ مَا مَلَكْتُمْ مَّفَاتِحَهٗٓ

घरों से या अपनी खालाओं के घरों से या उन घरों से जिन की कुन्जियों के तुम मालिक हो

اَوْ صَدِيْقِكُمْ ؕ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَاْكُلُوْا

या अपने दोस्तों के घरों से। तुम पर कोई गुनाह नहीं है इस में के तुम खाओ

جَمِيْعًا اَوْ اَشْتَاتًا ؕ فَاِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوْتًا فَسَلِّمُوْا

इकट्ठे या अलग अलग। फिर जब तुम घरों में दाख़िल हो तो तुम

عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُبٰرَكَةً

अपने आप पर सलाम करो अल्लाह की तरफ से बरकत वाले उम्दा तहीय्ये

طَيِّبَةً ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ

के तौर पर। इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए आयतें साफ़ साफ़ बयान करते हैं ताके तुम

تَعْقِلُوْنَ ۟﴿٦١﴾ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ ٨ ع ١٤

समझो। ईमान वाले तो वही हैं के जो ईमान लाए हैं अल्लाह पर

وَرَسُوْلِهٖ وَاِذَا كَانُوْا مَعَهٗ عَلٰٓى اَمْرٍ جَامِعٍ

और उस के रसूल पर, और जब वो रसूल के साथ होते हैं किसी इज्तिमाई काम पर

لَّمْ يَذْهَبُوْا حَتّٰى يَسْتَاْذِنُوْهُ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ

तो वो नहीं जाते जब तक के वो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से इजाज़त न मांग लें। यक़ीनन जो आप से इजाज़त मांगते

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ

हैं, यही हैं जो ईमान रखते हैं अल्लाह पर और उस के रसूल पर। फिर जब वो आप से इजाज़त

فَاِذَا اسْتَاْذَنُوْكَ لِبَعْضِ شَاْنِهِمْ فَاْذَنْ لِّمَنْ شِئْتَ

तलब करें अपने किसी काम के लिए तो आप इजाज़त दे दीजिए उन में से जिसे आप चाहें,

مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٦٢﴾

और उन के लिए अल्लाह से मग़फिरत तलब कीजिए। यक़ीनन अल्लाह बख़्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं।

لَا تَجْعَلُوْا دُعَآءَ الرَّسُوْلِ بَيْنَكُمْ كَدُعَآءِ بَعْضِكُمْ

तुम अपने दरमियान रसूल के बुलाने को तुम्हारे एक दूसरे के बुलाने की तरह

بَعْضًا ؕ قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ يَتَسَلَّلُوْنَ مِنْكُمْ

मत बनाओ। यक़ीनन अल्लाह जानता है उन लोगों को जो तुम में से चुपके से सरक कर

لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِيْنَ يُخَالِفُوْنَ عَنْ اَمْرِهٖۤ

निकल जाते हैं। तो जो अल्लाह के हुक्म की मुख़ालफ़त करते हैं उन्हें डरना चाहिए

اَنْ تُصِيْبَهُمْ فِتْنَةٌ اَوْ يُصِيْبَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦٣﴾

इस से के उन पर कोई आफ़त आ जाए या उन्हें दर्दनाक अज़ाब पहोंचे।

اَلَاۤ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قَدْ يَعْلَمُ

सुनो! यक़ीनन अल्लाह की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों और ज़मीन में हैं। यक़ीनन अल्लाह जानता है

مَاۤ اَنْتُمْ عَلَيْهِ ؕ وَيَوْمَ يُرْجَعُوْنَ اِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُمْ

उस को जिस पर तुम हो। और जिस दिन वो उस की तरफ़ लौटाए जाएंगे तो वो उन्हें उन के आमाल की ख़बर देगा

بِمَا عَمِلُوْا ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٦٤﴾ ع ٩

जो उन्हों ने किए। और अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाला है।

اٰيَاتُهَا ٧٧ (٢٥) سُوْرَةُ الْفُرْقَانِ مَكِّيَّةٌ (٤٢) رُكُوْعَاتُهَا ٦

उस में ७७ आयतें हैं सूरह फ़ुरक़ान मक्का में नाज़िल हुई और ६ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

تَبٰرَكَ الَّذِىْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰى عَبْدِهٖ لِيَكُوْنَ

बुलन्द शान वाला है वो अल्लाह जिस ने हक़ और बातिल के दरमियान फ़ैसला करने वाली किताब उतारी अपने बन्दे

لِلْعٰلَمِيْنَ نَذِيْرَا ۙ﴿١﴾ اِلَّذِىْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ

पर ताके वो तमाम जहान वालों के लिए डराने वाला बने। वो अल्लाह जिस के लिए आसमानों और ज़मीन की

وَالْاَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ

सल्तनत है और उस ने कोई औलाद नहीं बनाई और उस का सल्तनत में कोई

فِى الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَىْءٍ فَقَدَّرَهٗ تَقْدِيْرًا ﴿٢﴾

शरीक नहीं और उस ने हर चीज़ पैदा की, फिर सब की मिक़दार मुतअय्यन कर रखी है।

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً لَّا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا

और ये अल्लाह के सिवा कई माबूद क़रार देते हैं, जिन्हों ने कुछ भी पैदा नहीं किया

وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ وَلَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ ضَرًّا

बल्के वो खुद पैदा किए गए हैं और अपने जानों के लिए भी किसी नफ़ा नुक़सान के

وَّلَا نَفْعًا وَّلَا يَمْلِكُوْنَ مَوْتًا وَّلَا حَيٰوةً

मालिक नहीं हैं और मौत और हयात के भी मालिक नहीं हैं

وَّلَا نُشُوْرًا ۝٣ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ

और न ज़िन्दा हो कर उठने के मालिक हैं। और काफ़िर लोग केहते हैं के ये तो नहीं है

اِلَّآ اِفْكُ ۨافْتَرٰىهُ وَاَعَانَهٗ عَلَيْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ ۛۚ

मगर झूठ जिस को इस नबी ने घड़ लिया है और उस पर दूसरे लोगों ने उस की मदद की है।

فَقَدْ جَآءُوْ ظُلْمًا وَّ زُوْرًا ۝٤ۛ وَقَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ

यक़ीनन वो ज़ुल्म और झूठी बात लाए हैं। और ये लोग केहते हैं के ये तो अगलों की घड़ी हुई

معانقة ١٠ عند المتأخرين ١٢

الْاَوَّلِيْنَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلٰى عَلَيْهِ بُكْرَةً

कहानियाँ हैं जिन्हें इस नबी ने लिख लिया है, फिर वही उस पर सुबह व शाम पढ़ी

وَّاَصِيْلًا ۝٥ قُلْ اَنْزَلَهُ الَّذِيْ يَعْلَمُ السِّرَّ

जाती हैं। आप फरमा दीजिए के ये उस ने उतारा है जो छुपे हुए भेद जानता है

فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ غَفُوْرًا

आसमानों में और ज़मीन में। यक़ीनन वो बख़्शने वाला, निहायत रहम

رَّحِيْمًا ۝٦ وَقَالُوْا مَالِ هٰذَا الرَّسُوْلِ يَاْكُلُ

वाला है। और ये कुफ़्फ़ार केहते हैं के ये कैसा रसूल है के वो खाना

الطَّعَامَ وَيَمْشِيْ فِي الْاَسْوَاقِ ؕ لَوْلَآ اُنْزِلَ

भी खाता है और बाज़ारों में भी चलता है? उस पर कोई फ़रिशता

اِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُوْنَ مَعَهٗ نَذِيْرًا ۝٧ۙ اَوْ يُلْقٰٓى

क्यूं नहीं उतारा गया जो उस के साथ डराने वाला होता? या उस की

اِلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ تَكُوْنُ لَهٗ جَنَّةٌ يَّاْكُلُ مِنْهَا ؕ

तरफ खज़ाना डाल दिया जाता या उस के लिए कोई बाग़ होता जिस में से वो खाता।

وَقَالَ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ۝٨

और ज़ालिमों ने कहा के तुम तो एक मसहूर शख़्स के पीछे चल पड़े हो।

اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا

आप देखिए के उन्हों ने आप के लिए कैसी मिसालें बयान की हैं, फिर वो गुमराह हो गए,

فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ۝٩ تَبٰرَكَ الَّذِيْٓ ع ٢

अब राह नहीं पा सकते। ऊँची शान वाला है वो अल्लाह

اِنْ شَآءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّنْ ذٰلِكَ جَنّٰتٍ

अगर वो चाहे तो आप के लिए इस से बेहतर बाग़ात बना दे

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ وَ يَجْعَلْ لَّكَ

जिन के नीचे से नेहरें बेहती हों और आप के लिए महल

قُصُوْرًا ۝١٠ بَلْ كَذَّبُوْا بِالسَّاعَةِ ۫ وَاَعْتَدْنَا

बना दे। बल्के उन्हों ने क़यामत को झुठलाया। और हम ने

لِمَنْ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيْرًا ۝١١ۚ اِذَا رَاَتْهُمْ

उस शख़्स के लिए जो क़यामत को झुठलाए आग तय्यार कर रखी है। जब ये आग

مِّنْ مَّكَانٍۭ بَعِيْدٍ سَمِعُوْا لَهَا تَغَيُّظًا

उन को दूर जगह से देखेगी, तो वो उस आग का ग़ुस्सा और चिल्लाना

وَّ زَفِيْرًا ۝١٢ وَاِذَآ اُلْقُوْا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِيْنَ

सुनेंगे। और जब वो उस जहन्नम में तंग जगह में डाले जाएंगे हाथ पैर जकड़े हुए

دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُوْرًا ۝١٣ۭ لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُوْرًا

तो वहां मौत की दुआ करेंगे। तो (फ़रिशते कहेंगे के) तुम आज एक मौत

وَّاحِدًا وَّادْعُوْا ثُبُوْرًا كَثِيْرًا ۝١٤ قُلْ اَذٰلِكَ خَيْرٌ

को न पुकारो, बल्के बहोत सी मौतों को पुकारो। आप फ़रमा दीजिए क्या ये बेहतर है

اَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ كَانَتْ

या हमेशा की वो जन्नत बेहतर है जिस का मुत्तक़ियों से वादा किया गया है? जो

لَهُمْ جَزَآءً وَّمَصِيْرًا ۝١٥ لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَآءُوْنَ

उन का बदला और ठिकाना है। उन के लिए उस जन्नत में वो तमाम चीज़ें होंगी जो वो चाहेंगे

خٰلِدِيْنَ ؕ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْـُٔوْلًا ۝١٦

हमेशा रहेंगे। अल्लाह के ज़िम्मे ये लाज़िम है ऐसे वादे के तौर पर जिस का सवाल किया जा सकता है।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

और जिस दिन अल्लाह उन्हें और जिन चीज़ों की ये इबादत करते हैं अल्लाह को छोड़ कर उन को इकट्ठा करेगा

فَيَقُوْلُ ءَاَنْتُمْ اَضْلَلْتُمْ عِبَادِيْ هٰٓؤُلَآءِ

फिर अल्लाह कहेगा क्या तुम ने मेरे इन बन्दों को गुमराह कर रखा था

اَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيْلَ ؕ ۝١٧ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ مَا كَانَ

या वो खुद रास्ते से भटक गए थे? माबूद कहेंगे के आप पाक हैं! हमारे लिए

يَنْۢبَغِيْ لَنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ مِنْ دُوْنِكَ

मुनासिब नहीं था के हम आप के अलावा कोई हिमायती

مِنْ اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنْ مَّتَّعْتَهُمْ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى نَسُوا

बनाते, लेकिन आप ने उन को और उन के बाप दादा को आसूदगी अता की यहां तक के वो ये

الذِّكْرَ ۚ وَكَانُوْا قَوْمًاۢ بُوْرًا ۝١٨ فَقَدْ كَذَّبُوْكُمْ

ज़िक्र भुला बैठे। और वो हलाक होने वाली क़ौम थी। अब इन माबूदों ने तुम्हारी बातों में तुम्हें झूठा

بِمَا تَقُوْلُوْنَ ۙ فَمَا تَسْتَطِيْعُوْنَ صَرْفًا وَّلَا نَصْرًا ۚ

ठेहराया, इस लिए अज़ाब हटाने और अपनी नुसरत करने की तुम ताक़त नहीं रख सकोगे।

وَمَنْ يَّظْلِمْ مِّنْكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيْرًا ۝١٩

और जो तुम में से ज़ुल्म करेगा तो हम उसे बड़ा अज़ाब चखाएंगे।

وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ

और हम ने आप से पेहले जितने रसूल भेजे

اِلَّآ اِنَّهُمْ لَيَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَ يَمْشُوْنَ

वो सब खाना खाते थे और बाज़ारों में

فِي الْاَسْوَاقِ ؕ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً ؕ

चलते थे। और हम ने तुम में से एक को दूसरे के लिए आज़माइश (का ज़रिया) बनाया है।

اَتَصْبِرُوْنَ ۚ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيْرًا ۝٢٠ ع ١٦

क्या तुम सब्र करते हो? और आप का रब सब देख रहा है।